

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



Founder's Essay

अच्छे श्रोता को हमेशा पसन्द करते हैं

किसी ने एक बार मुझसे कहा था, “रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यों से बात करना सचमुच सहल है।” उसने टिप्पणी की थी कि जब कोई किसी सामूहिक कार्यक्रम में बोल रहा था, सभी सदस्यों ने सीधे वक्ता की ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा कि वक्ता के सभी बिंदुओं पर हमारी सहमति है। ऐसी प्रशंसा वास्तव में हर्षित करती है!

रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यों में कई अद्भुत गुण हैं, और मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि उनमें श्रोता बनने की क्षमता है। जब लोग बोल रहे हैं, वे शब्दों के माध्यम से अपना उदगार प्रकट करते हैं। किसी भी चीज से ज्यादा वक्ता की चिंता रहती है कि क्या श्रोतागण वास्तव में वही समझ रहे और स्वीकार कर रहे हैं, जो वह कह रहा है। यदि श्रोतागण अभिव्यक्तिहीन, नज़र कहीं और, या बेचैन लगते हैं, वक्ता को ऐसा लगता है कि उन्हें अनदेखा किया जा रहा है, और उनके शब्द हृदय से नहीं निकल रहे हैं।

ऐसा ही होजा में भी है। यदि सूत्रधार का ध्यान इधर या उधर भटक रहा है और वह केवल आधे मन से लोगों की कहानियों को सुन रहा है, तो वक्ता उपेक्षित अनुभव करेगा। लेकिन अगर सूत्रधार गंभीरता से उनकी बातें सुनता है और उनकी पुष्टि करता है, तो उस व्यक्ति को लगेगा कि वह भार मुक्त हुआ है।

जब होजा की बात आती है, तो अच्छा श्रोता होना सबसे पहले आता है। यदि एक अच्छा वक्ता लापरवाह है, तो यह कभी-कभी लोगों में खिज पैदा करेगा, लेकिन अच्छा श्रोता शायद ही कभी नापसंद किया जाता है।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 158 - 59

Living the Lotus Vol. 176 (May 2020)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Osada
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेइकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुसरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

शान्त एवं शान्तिपूर्ण

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ



इवामि के जेन्तारो: सच्चे धर्मनिष्ठ

वर्तमान के शिमाने प्रीफेक्चर का हामादा नगर में चिकासिगे जेन्तारो नाम के एक व्यक्ति थे। वे एदो काल के उत्तरकाल के दौरान हुए थे और उन्हें जापानी बौद्ध धर्म के जोदो संप्रदाय के सच्चे धर्मनिष्ठ (जापानी में म्योकोनिन) थे। ऐसे साधक के चरित्र को सफेद कमल पुष्प के समान विशुद्ध माना जाता था।

जब जेन्तारो युवा थे, उन्होंने इतना बुरा बर्ताव किया कि गाँव वाले उन्हें अभद्रतारो, इल्लि कहते थे। आखिरकार, उन्होंने अमिदा बुद्ध में विश्वास जगाया और लोगों ने आदरपूर्वक उन्हें इवामी का जेन्तारो कहने लगे।

एक दिन एक सहधर्मावलंबी मित्र जेन्तारो से मिलने आए। उस मित्र ने जेन्तारो के लिए रात्रि आवास का प्रबंध किया, जब वे क्योटो में संप्रदाय के प्रमुख मंदिर में प्रार्थना करने गये थे। जेन्तारो ने मुस्कराते हुए उनका अभिवादन किया, लेकिन मित्र ने अचानक जेन्तारो को चोर कहा और उन्हें फटकार लगाई। उन्होंने कहा कि जेन्तारो ने एक किमोनो चुरा लिया था और उसे अपने साथ ले गया था।

हालाँकि जेन्तारो को ऐसा करने का स्मरण नहीं हुआ, उन्होंने विनम्रता से माफी माँगते हुए कहा, “ठीक है, यह एक बुरी बात थी।” उन्होंने अपने मित्र को किमोनो की लागत के लिए पर्याप्त धन दिया, और कहा, “मेरे पास यहाँ बहुत कुछ नहीं है, लेकिन कम से कम मैं आपको अपने लोगों के लिए घर पर ले जाने के लिए कुछ मुगवॉर्ट मोमो (dumplings) दे सकता हूँ।” उन्होंने कुछ मुगवॉर्ट मोमो (dumplings) को लपेटकर वेदी पर प्रसाद के रूप में चढ़ाया और उन्हें अपने मित्र को उपहार के रूप में दिया था।

सहधर्मावलंबी मित्र अपने घर लौट आया और वहाँ सभी के साथ मुगवॉर्ट मोमो (dumplings) खाने लगा। हालाँकि, उनके घर में काम करने वाली एक युवती नीचे की ओर देखती रही, लेकिन उसने मोमो (dumplings) को हाथ नहीं लगाया। उसने उससे पूछा, “तुम क्यों नहीं खा रही हो?”

उसने अपना अधर्म स्वीकार किया: “मैंने तुमसे कहा था कि जेन्तारो ने किमोनो चुरा लिया है, असल में, मैंने उसे ले लिया था।”

यदि आप जेन्तारो की स्थिति में होते, तो आप उस स्थिति को कैसे स्वीकारते और कैसी प्रतिक्रिया देते?

सहर्ष बुद्धमार्ग का अनुसरण करना

यदि यह संभव होता, हम किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संबंध नहीं रखते, जो लोगों पर बिना सोचे ही आरोप लगाता है और दूसरा क्या कहता है, इसे सुने बिना ही स्वार्थपरक लांछनायें लगाता है, जैसाकि इस कथा में व्यक्ति ने किया है। इसके अतिरिक्त, आमतौर पर चोरी की लांछना को बिना प्रतिवाद के सहज ही स्वीकार करना असंभव है।





इस अर्थ में, मेरे पास ज़ेन्तारो की प्रतिक्रिया के लिए प्रशंसा के अलावा कुछ भी नहीं है। हालाँकि, स्वयं को निर्दोष बताने का प्रयास बिना ही, ज़ेन्तारो लांछना को स्वीकारने में सक्षम हुए?

मुझे लगता है कि ऐसा ज़ेन्तारो के अडिग विश्वास के कारण हुआ होगा। उन्होंने “अमिताभ बुद्ध पर अपना सब कुछ छोड़ रखा था,” क्योंकि वे जानते थे कि उन्होंने कुछ भी ऐसा नहीं किया है, जिसके लज्जित होना है और अमिताभ बुद्ध तो सब कुछ देख ही रहे हैं। इस तरह, शांतभाव से एवं शांतिप्रिय मन के साथ वे स्थिति को स्वीकार कर सके।

बौद्ध गाथा से ये पंक्तियाँ उद्धृत हैं:

“आलोचक एवं जिसकी आलोचना होनी है,
पुण्डरीक मंच पर एक साथ बैठे हैं।”

दूसरे शब्दों में, बुद्ध से समक्ष सभी लोग समान हैं-इसलिए, ज़ेन्तारो ने सोचा होगा कि अपनी निर्दोषता पर बल देना और युक्ति से अपने को मित्र से बेहतर सिद्ध करना उसकी अपनी क्षुद्रता होगी।

पुण्डरीक सूत्र का अध्याय: “दृढ़ रहने का प्रोत्साहन” में यह गाथा शामिल है:

“अपने शरीर और जीवन की परवाह नहीं,
हमें केवल अद्वितीय मार्ग की चिन्ता है।”

यह गाथा श्रद्धाविश्वास में दृढ़ रहने की अभिव्यक्ति है, लेकिन मुझे लगता है कि “अपने शरीर और जीवन की परवाह नहीं” का अर्थ केवल यह नहीं है कि “अपने स्वयं के जीवन के बारे में नहीं सोचें।” इसके बजाय, यदि आप इस पृथ्वी पर अभी पैदा होने और जीवित रहने के चमत्कार से अवगत हैं, तो आप अब उस अहंकार के शिकार नहीं हो सकते हैं जो कहता है कि “मैं ठीक हूँ, यही मायने रखता है।” आपको उन सम्बन्धों के लिए आभारी होने के महत्व का अहसास होगा, जो जीवन को बनाए रखने और आपके जीने के कारण बनाते हैं।

“हमें केवल अद्वितीय मार्ग की चिन्ता है” का अर्थ है कि जबसे हमने उन सम्बन्धों के प्रति आभार प्रकट करने के लिए अपनी आँखें खोली हैं, हम यथासंभव अधिक से अधिक लोगों के साथ अपनी कृतज्ञता की भावना को साझा करना चाहते हैं। हममें से जो लोग पुण्डरीक सूत्र की धर्मदेशनाओं के माध्यम से कृतज्ञता की ऐसी भावनाओं के प्रति जागृत हुए हैं, उन्हें इन धर्मदेशनाओं को दूसरों के साथ साझा करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए और साथ में जीवंत होने की खुशी और कृतज्ञता का अनुभव करना चाहिए।

हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि इसका अर्थ यह है कि आपको दूसरे लोगों को बदलने या मनाने का प्रयास करना चाहिए। बुद्ध के उपदेशों का सहर्ष अभ्यास करना और लोगों के साथ आनंद से बातचीत करना काफी अच्छा है, क्योंकि इससे किसी और को ज़िंदा रहने के लिए आभार प्रकट किया जा सकता है।

ज़ेन्तारो के दृष्टान्त को “मुगोर्ट मोमो (dumplings) के साथ धर्मोपदेश” कहा जाता है। कट्टर धर्मनिष्ठ ज़ेन्तारो की दयालुता ने युवती की अंतरात्मा को प्रभावित किया, जो मुझे सोचने के लिए प्रेरित करता है कि ज़ेन्तारो का वास्तव में सच्चा अनुयायी का क्या मतलब है-जो शांत और शांतिपूर्ण जीवन जीते हैं।



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

अध्याय 15: पृथ्वी से बाहर निकल आना

इस अध्याय के साथ हम सूत्र के उत्तरार्ध का आरंभ करते हैं, जो धर्म का उद्भव (अध्याय 15 के माध्यम से 28) से संबंधित है, जिसमें बुद्ध के परम सत्य की विवेचना है। इस अध्याय का पूर्वार्ध भाग धर्म के उदय का परिचय देता है, जबकि उत्तरार्ध भाग-अध्याय-16 के साथ अध्याय-17 का पूर्वार्ध भाग को-धर्म का उद्भव का मुख्य भाग माना जाता है।

इतर बुद्धभूमि के बोधिसत्वों का संकल्प

जैसाकि यह अध्याय आरंभ होता है, लोकप्रतिष्ठ द्वारा 14. सुखविहार अध्याय की धर्मदेशना के उपदेश के परे, आठ गंगा के बालूकणों के समान असंख्य अनन्त बोधिसत्व आगे आते हैं और बुद्ध के परिनिर्वाण के अनन्तर सहालोक में धर्मदेशना के प्रचार प्रसार के लिए स्वयं को समर्पित करने का निवेदन करते हैं। बुद्ध ने इतर लोक से आये बोधिसत्वों को आश्चस्त किया कि उनकी मदद की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस लोक में पूर्व से ही अनगिनत बोधिसत्व विद्यमान हैं, पुण्डरीक सूत्र को प्रकाश में लाना उनका कर्तव्य है।

बोधिसत्व पृथ्वी से बाहर निकल आये

बुद्ध के ऐसा कहने के साथ ही, पृथ्वी की सतह फट जाती है और अनगिनत बोधिसत्व विवर से निकल आते हैं, जो सभी बुद्ध के समान दीखते हैं। बोधिसत्वों के इस समूह का नेतृत्व चार अत्यन्त उत्कृष्ट करते हैं-वे हैं-विशिष्ट चरित्र, अनन्त चरित्र, विशुद्ध चरित्र एवं सुप्रतिष्ठित चरित्र। वे बुद्ध को नमन करने के लिए आगे आते हैं और बदले में स्वतंत्र और परिचित ढंग से संबोधित होते हैं।

बोधिसत्व मैत्रेय के प्रश्न

जो बुद्ध को सुनने के लिए इकट्ठे हुए थे, वे इस विकास से हैरान हैं, और उनके प्रश्न को बोधिसत्व मैत्रेय ने एक लंबे कथन में व्यक्त किया है, जो पूछते हैं कि ये भव्य बोधिसत्व कहाँ से आए हैं और वे यहाँ क्यों एकत्र हुए हैं। बुद्ध मात्र इतना ही उत्तर देते हैं कि वे वही हैं

जिन्हें मैंने प्रशिक्षित किया है और वे मेरे इस सहालोक में बोधिज्ञान की प्राप्ति के उपरान्त बदल गये हैं। वे अबतक सहालोक के नीचे रिक्त आकाश में रहते हैं। इसके अलावा, यह पता चला है कि वे दीर्घ पूर्व से इन बोधिसत्वों को निर्देश दे रहे हैं।

यह सरल उत्तर लगता है कि बोधिसत्व मैत्रेय और अन्य प्रश्नकर्ताओं को मात्र उलझन में डालने वाला है, क्योंकि वे समझ नहीं सकते कि मात्र चालीस से अधिक कुछ वर्षों में शाक्यमुनि ने बोधिज्ञान की प्राप्ति के उपरान्त, इतने सारे प्राणियों को पूर्णता की स्थिति में लाना संभव था, जो बुद्ध के समान दीख रहे हैं। विशेषकर, इन वर्षों में बुद्ध के कोई भी करीबी उनसे कभी नहीं मिला है। अध्याय इस काव्यात्मक पुनरावृत्ति के साथ बंद हो जाता है, जिसमें वे सभी अब खड़े हैं। बोधिसत्व मैत्रेय ने शाक्यमुनि को समझाने और उनके संदेह को दूर करने के लिए आग्रह किया।





मूल बोधिसत्व और पदचिह्नानुग्राही बोधिसत्व

यहाँ, बोधिसत्वों में दो प्रकार के बोधिसत्व-मूल बोधिसत्व “और” पदचिह्नानुग्राही बोधिसत्व है, जिनकी व्याख्या की जानी चाहिए।

पदचिह्नानुग्राही बोधिसत्व वे हैं जो ऐतिहासिक शाक्यमुनि बुद्ध द्वारा प्रशिक्षित और बोधिसत्व मार्ग में अग्रसारित हैं। ऐतिहासिक बुद्ध ने भारत में जन्म लिया और बोधि वृक्ष के नीचे बोधिज्ञान प्राप्त किया। इसलिए ऐसे मानव के रूप में बोधिसत्व बने शाक्यमुनि बुद्ध के पदचिह्नानुग्राही बोधिसत्व हैं।

दूसरी ओर, मूल बोधिसत्व आदि बुद्ध (अध्याय 16 में प्रकट होने वाले शाश्वत आदि बुद्ध, “तथागत का अनन्त जीवन काल”) द्वारा प्रशिक्षित और रूपांतरित हैं। पृथ्वी के विवर से बाहर निकले बोधिसत्व आदि बुद्ध की धर्मदेशना के और उनके समरूप हैं। बोधिसत्व मैत्रेय और अन्य बोधिसत्व शाश्वत आदि बुद्ध के सम्बन्ध अज्ञान थे, यही कारण था कि शाश्वतमुनि के उत्तर से सभी इतने भ्रमित थे।

पृथ्वी के विवर से निकल आये मूल बोधिसत्वों की उत्कृष्टता (चार महान बोधिसत्वों सहित) पर इस अध्याय में जोर दिया गया है, संभवतः इसलिए कि बुद्ध हमें इस ओर आकृष्ट करना चाहते हैं कि स्व-जागरूक मूल बोधिसत्व कितने अमूल्य और अद्भुत हैं। ऐसी संभावना है कि बुद्ध सभी लोगों को उन बोधिसत्वों की तरह होने की इच्छा रखते हैं, जो पृथ्वी से बाहर निकल आये हैं।

शाक्यमुनि स्वयं शाश्वत आदि बुद्ध के अलावा अन्य कोई और नहीं हैं, जैसा कि अध्याय 16 में स्पष्ट किया गया है। यदि हम इस तथ्य को पहचानते हैं, तो हम हृदय के अन्तःकरण से विश्वास करते हैं कि हम आदि बुद्ध के बच्चे हैं, और पुण्डरीक सूत्र की देशना का अभ्यास करते हैं। हम मनुष्य के रूप में रहते हुए भी मूल बोधिसत्व हैं।

तदनुसार, हममें से जो लोग बुद्ध की धर्मदेशनाओं को सीखते हैं और उनका अभ्यास करते हैं और लोगों की मुक्ति के लिए काम करते हैं (अपनी क्षमताओं के दायरे में), वे पदचिह्नानुग्राही बोधिसत्व हैं। लेकिन, यदि कुछ लोगों में, अपने हृदय के अन्तःकरण से, ऐसी जागरूकता है कि वे उन बोधिसत्वों में से एक थे जो पृथ्वी के विवर से निकले थे, और वे पुण्डरीक सूत्र की भावना के साथ बोधिसत्व मार्ग का अभ्यास करते हैं, ऐसे व्यक्ति मूल बोधिसत्व हैं। भले ही उनके कृत्य पदचिह्नानुग्राही बोधिसत्वों जैसे दिखते हों।

बाह्य रूप में, दो प्रकार के बोधिसत्वों के विश्वास समान दिखते हैं, लेकिन उनके विश्वास के आंतरिक तत्व के संदर्भ में, उनके बीच एक स्पष्ट अंतर है जो उनके निर्देश और मुक्ति के कार्य में स्पष्ट हो आता है।

पृथ्वी के विवर से निकले बोधिसत्वों का महत्व

हठात् पृथ्वी के विवर से निकले बोधिसत्वों को देखने के तरीके अलग-अलग हैं, लेकिन हम विशेष व्याख्या के साथ तीन प्रश्नों का अवलोकन कर सकते हैं।

प्रथम यह है कि शाक्यमुनि ने इतर लोक से आये बोधिसत्वों द्वारा किया गया निवेदन को अस्वीकार कर दिया और इस सहालोक के प्रशिक्षण और परिवर्तन लाने का भार पृथ्वी के विवर से निकले बोधिसत्व के जिम्मे सौंपा। यहाँ प्रश्न यह है कि किसी एक जगह पर शांति और खुशी लाना केवल वहाँ के रहने लोगों के परिश्रम एवं प्रयास से संभव है।

ध्यान देने का द्वितीय प्रश्न है कि जब बोधिसत्व स्व-आनंद में निमग्न सहालोक के नीचे रिक्त आकाश में स्थित रह रहे थे, बुद्ध की आवाज को सुनकर पृथ्वी के विवर से निकल आये। हालाँकि निश्चित रूप से इस लोक के बोधिसत्व शून्यता के अज्ञानता के साथ संतुष्ट थे (यह मानते हुए कि मानव का सार बुद्ध-प्रकृति है, जो सभी लोगों के पास समान रूप से है)। वे निश्चित रूप से इस सच्चाई से अवगत थे, लेकिन उन्होंने केवल अपने आप में इसका आनंद लिया; वे अभी तक सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति के लिए बाहर की ओर नहीं गए थे।

बोधिसत्वों के लिए पृथ्वी के विवर से बाहर निकल आने की परम आवश्यकता थी, उन्हें समाज के वास्तविक जीवन का अनुभव करना था और लोगों के साथ खड़ा होना था, जो लोक की पीड़ा और प्रदूषण के बीच पीड़ित थे। केवल इस तरह से वे वास्तव में लोगों का नेतृत्व करने और उन्हें मुक्त कराने के काम आ सकते थे। यहाँ प्रश्न यह है कि यह केवल विचारों के आदान प्रदान के लिए नहीं है, क्योंकि वास्तविक संपर्क में आये बिना, मानव जाति को मुक्त नहीं कराया जा सकता है।

ध्यान देने वाला तीसरा प्रश्न है कि इस अध्याय के चार महान बोधिसत्वों के नाम में समान “चरित्र” शब्द है, जो विशिष्ट चरित्र, अनन्त चरित्र, विशुद्ध चरित्र एवं सुप्रतिष्ठित चरित्र।

पुण्डरीक सूत्र का पूर्वार्ध भाग काफी हद तक कारण और सत्य की देशना में समर्पित है; ज्ञान की देशना में समर्पित है। लेकिन सूत्र के इस पूर्वार्ध भाग की समाप्ति पर, हठात् हम अनगिनत बोधिसत्वों की अचानक उपस्थिति को देखते हैं, जो अभ्यासरत हैं। यह इस विचार का प्रतीक है कि कोई भी शिक्षा वास्तविक जीवन के प्रयोग में आये बिना उसका कोई मूल्य नहीं है। सच्चा बोधिसत्व वे है जो अभ्यासरत हैं, जो वास्तविक जीवन में सभी धर्मों की परम वास्तविकता के ज्ञान की विवेचना करते हैं और जो धर्म के उदय में

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें



सूत्र के पूर्वार्ध भाग में प्रकट होते हैं। ये बोधिसत्व करुणा का पालन करते हैं-अभ्यास के माध्यम से बुद्ध-प्रकृति की समानता की सच्चाई का एहसास करते हैं-वे बुद्ध की देशनाओं को इस लोक में सार्थक बनाते हैं। चूँकि यह आधुनिक समय के विश्वास करनेवालों पर लागू होता है, इसलिए इस संदेश को दिल से लेना महत्वपूर्ण है।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्रः प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.148-53.



सहर्ष बुद्धमार्ग का पालन करना

मुझे आशा है कि हर किसी का स्वास्थ्य अच्छा होगा, भले ही आप नये कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के कारण अशांत माहौल में होंगे।

इस महीने के लिए प्रेसिडेण्ट के संदेश का शीर्षक है-“शांत और शांतिपूर्ण।” इसमें, प्रेसिडेण्ट निवानो हमें दिखाते हैं कि कैसे हम इस परीक्षा की घड़ी में अपना अभ्यास जारी रख सकते हैं। वे जेन्तारो के बारे में एक दृष्टान्त साझा करते हैं, जो जापान के एदो-काल में एक धर्मनिष्ठ बौद्ध थे, जिन पर चोरी का झूठा आरोप लगाया गया था, लेकिन उन्होंने अपनी बेगुनाही सिद्ध करने की कोशिश भी नहीं की। कथा दर्शाती है-बुद्ध में दृढ़ गहरे विश्वास की शक्ति को और इस विश्वास को कि बुद्ध सब कुछ देखते हैं। इस विश्वास के साथ, हम शांत और शांतिपूर्ण जीवन यापन कर सकते हैं।

पुण्डरीक सूत्र के अध्याय-13 से एक अंश उद्धृत करते हुए, “दृढ़ रहने का प्रोत्साहन,” जो पढ़ता है:

“अपने शरीर और जीवन की परवाह नहीं,
हमें केवल अद्वितीय मार्ग की चिन्ता है।”

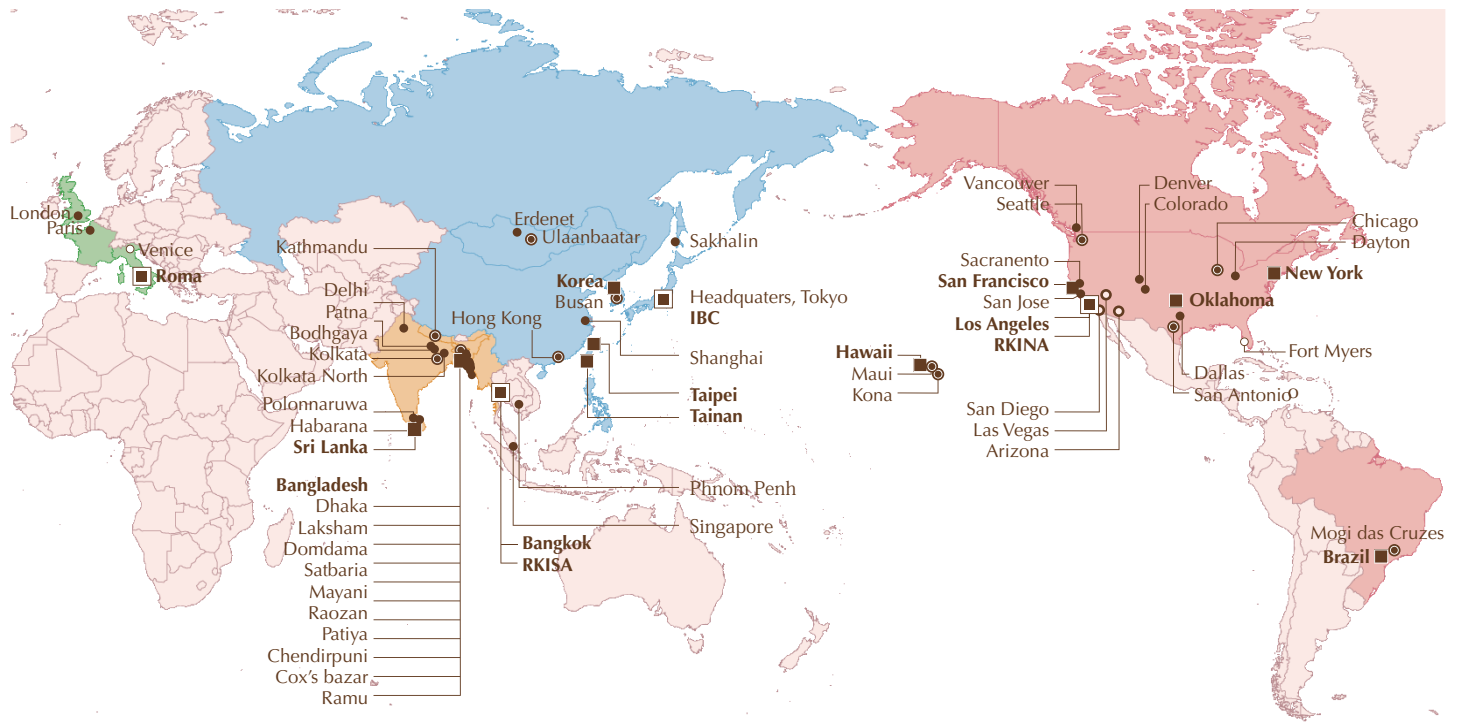
प्रेसिडेण्ट निवानो हमें सभी कार्मिक सम्बन्धों के प्रति आभारी होने के महत्व की याद दिलाते हैं, जिनके कारण हमारा जीवन चल रहा है। फिर वे हमें बताते हैं कि दूसरों के साथ धर्मदेशनाओं को साझा करते हुए रोजमर्रे की जिंदगी को नियंत्रित रखना है-इस आशा में कि कई और लोग जीवित होने की अनमोलता के प्रति जागृत होंगे-बुद्ध मार्ग का सहर्ष अनुपालन करने के सिवाय और कुछ नहीं है।

इस महीने, मुझे उम्मीद है कि हम स्वयं को शांत और शांतिपूर्ण मन से देशनाओं को साझा करने के प्रति समर्पित रहेंगे, जैसा कि हमने प्रेसिडेण्ट के संदेश में सीखा है।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
 TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
 Email: info@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
 TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
 TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
 POBox 33636, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
 Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
 POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
 TEL: 1-650-359-6951 Email: info@rksf.org
 URL: <http://www.rksf.org>

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
 TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: <http://rk-ny.org>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
 TEL: 1-773-842-5654
 Email: murakami4838@aol.com URL: <http://rkchi.org>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
 POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
 TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
 Email: rkokdc@gmail.com URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
 TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
 URL: <http://www.rkina-dayton.com>

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
 Email: info@rkina.org URL: <http://www.rkina.org>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
 (Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
 TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
 Email: dharmasanantonio@gmail.com
 URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
 TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
 Email: rkseattlewashington@gmail.com
 URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
 TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
 Email: risho@rkk.org.br URL: <http://www.rkk.org.br>

Facebook: <https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil>
Instagram: <https://www.instagram.com/rkkbrasil>

Risho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓國立正佼成會

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓國立正佼成會釜山支部

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會

台灣台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: kosekaitainan@gmail.com

Risho Kosei-kai South Asia Division

Thai Risho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Risho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Risho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Risho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Risho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Risho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Risho Kosei-kai of Central Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Risho Kosei-kai of Singapore

Risho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Risho Kosei-kai International of South Asia

Thai Risho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Risho Kosei-kai of Bangkok

Thai Risho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairisho@gmail.com

Risho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Risho Kosei-kai of Polonnaruwa

Risho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Risho Kosei-kai Mayani

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Damdama

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Patiya

China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Satbaria

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Chendhirpuni,

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Risho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Risho Kosei-kai Laksham

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Risho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Risho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Risho Kosei-kai Raozan

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Risho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Risho Kosei-kai Friends in Shanghai

Risho Kosei-kai of Ulaanbaatar

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Risho Kosei-kai of Erdenet

Risho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Risho Kosei-kai of the UK

Risho Kosei-kai of Paris

Risho Kosei-kai of Venezia

Risho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibt-rk.org>